

राजस्थान की जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन (प्रतापगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में)



धर्मेन्द्र कुमार खटीक
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

राजस्थान भारत के 6 जनजाति बहुल राज्यों में से एक है यहां मुख्यतः भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, डामोर कथौड़ी, व कुछ अन्य जनजातियों के लोग निवास करते हैं। राज्य का समूचा दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र जनजाति बहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में बांसवाडा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ एवं सिरोही जिले के आबू – पिण्डवाडा क्षेत्र तथा भीलवाडा का दक्षिणी भाग सम्मिलित हैं जो अरावली पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत आते हैं। पूर्व में राजस्थान की अनेक रियासतें मीणा एवं भील लोगों के नियंत्रण में थी। बांसवाडा के कुशलगढ़ नाम से ये स्थान आबाद हुए। इसी प्रकार जयपुर, अजमेर शाहपुरा, अलवर, टोंक एवं बूंदी के वर्तमान क्षेत्रों के शासक मीणा लोग ही थे। संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में अनुसूचित जनजातियां अधिसूचित की जाती हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 341 में जनजातियां पाई जाती हैं। लेकिन इनमें मीणा भील, गरासिया, सहरिया, कथौड़ी, डामोर आदि मुख्य हैं। राजस्थान अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अधिनियम 1976 के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की सूची निम्न है।

1. मीना।
2. भील मीना।
3. पटेलिया।
4. भील, भील गरासिया, ढोली भील, डूंगरी भील, डूंगरी गरासिया, मेवाती भील, रावल भील, तडवी भील भगालिया, भिलाला, पावरा, वसावा, वसावे।
5. डामोर, डामरिया।
6. कोकना, कोकनी, कूकना।
7. सेहारिया, सहारिया।
8. धानका, तडबी, वालवी, तेतारिया।
9. गरासिया (राजपूत गरासिया को छोड़कर)
10. कोली ढोर, काथोडी, ढोर काश्तकारी, सोन कथोडी, सोन कातकरी।
11. नायकडा, नायका, चोलीवाला, नायका, कापडिया नायका, मोटा नायका, नाना नायका।

मुख्य शब्द : जनगणना, जनसंख्या, अनुसूचित

प्रस्तावना

जनजातियों का सामाजिक विकास का अध्ययन

2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में 92.39 लाख 13.48 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजातियों की है। जनजाति जनसंख्या के आधार पर राज्य का देश में छठा स्थान है। तथा अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का राज्य की कुल जनसंख्या से अनुपात के हिसाब से राज्य का देश में 13 वाँ स्थान है। राज्य में सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या उदयपुर में 15.25 लाख व न्यूनतम बीकानेर में मात्र थी। जनजातियों का 95 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की 122.22 लाख आबादी है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 17.83 प्रतिशत है। राज्य में 2001 की जनगणना में अनुसूचित जनजाति का राज्य की कुल जनसंख्या में अनुपात 12.56 प्रतिशत था। जो 2011 में बढ़कर 13.48 प्रतिशत हो गया है। देश में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात मिजोरम में 94.4 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जाति की संख्या शून्य है।

राजस्थान में जिला स्तर पर अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का जिले की कुल जनसंख्या से अनुपात (2011 में) सर्वाधिक क्रमशः बांसवाडा (76.4 प्रतिशत), डूंगरपुर (70.8 प्रतिशत) तथा प्रतापगढ़ में (55.46 प्रतिशत) था

जबकि न्यूनतम क्रमशः नागौर (0.30 प्रतिशत) एवं बीकानेर (0.30 प्रतिशत) में था। राज्य में संख्या के लिहाज से अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक आबादी उदयपुर में (15.25 लाख) निवास करती है।

राजस्थान की अन्य जनजातियों में धानका, कोकना – कोकनी, कोली – ढोर, नायकडा – नायका, पटेलिया, कंजर, सांसी आदि अन्य छोटे समुदाय के लोग भी निवास करते हैं। महाराणा प्रताप की यशोगाथा बनाने में भील आदिवासियों का योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। मेवाड़ राज्य की रक्षार्थ किए गए भीलों के इस त्याग

एवं स्वामीभक्ति के कारण ही इस राज्य के राज्य चिह्न में चितौड़ के किले की एक ओर राजपूत राजा और दूसरी ओर भील राजा का चित्र अंकित है।

शोध विधि

प्राथमिक अवलोकन तथा शोध संस्थान में विभिन्न पुस्तकों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजस्थान में पाई जाने वाली जनजातियों की विशिष्ट संस्कृति को जानना।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या (लाखों में)

विवरण	अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति	
	2011	2001	2011	2001
भारत में कुल जनसंख्या	2013.78	1665.76	1042.81	835.61
भारत की जनसंख्या से अनुपात	16-63%	16-22%	8-08%	8-14%
देश में सर्वाधिक आबादी वाला राज्य	उत्तरप्रदेश	उत्तरप्रदेश	मध्यप्रदेश	मध्यप्रदेश
देश में सर्वाधिक अनुपात वाला राज्य	पंजाब	पंजाब	मिजोरम	मिजोरम
राजस्थान में sc/st की कुल जनसंख्या	122.22	96.94	92.39	70.98
राज्य की जनसंख्या से sc/st अनुपात	17.83%	17.16%	13.48%	12.56%
राज्य का अनुपात की दृष्टि से देश में स्थान	8 वां	9 वां	13वां	13वां
राज्य में अनुसूचित जाति/ जनजाति की सर्वाधिक आबादी वाले जिले।	1. जयपुर 2. गंगानगर	जयपुर 7.78 गंगानगर 6.03	उदयपुर 15.25 बांसवाडा 13.73	उदयपुर 12.60 लाख बांसवाडा 10.85
अनु. जाति/ जनजाति का सर्वाधिक अनुपात(प्रतिशत) वाले जिले	श्रीगंगानगर (36.6)% हनुमानगढ (27.8)%	श्रीगंगानगर हनुमानगढ	बांसवाडा (76.4)% डूंगरपुर (70.4)%	बांसवाडा (72.27)% डूंगरपुर (65.14)%
अनु. जाति/जनजाति की न्यूनतम आबादी वाले जिले	डूंगरपुर प्रतापगढ	डूंगरपुर बांसवाडा	बीकानेर नागौर	बीकानेर नागौर
अनु. जाति/ जनजाति के न्यूनतम अनुपात (प्रतिशत आबादी) वाले जिले।	डूंगरपुर बांसवाडा	डूंगरपुर बांसवाडा	नागौर 0.3% बीकानेर 0.3%	नागौर 0.23% बीकानेर
लिंगानुपात	923		948	

सन् 1951 में प्रदेश में अनुसूचित जाति की आबादी 16.9 लाख (10.58%) तथा अनुसूचित जनजाति की आबादी 3.36 लाख (2.04%) थी जो अब बढ़कर 2011 में क्रमशः 122.22 लाख (17.83%) तथा 92.39 लाख (13.48%) हो गई है।

राजस्थान की भील जनजाति

मीणा जनजाति के बाद भील राज्य की दूसरी सर्वाधिक बड़ी जनजाति है। भील शब्द द्रविड़ भाषा के "बील" का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ है। "तीर कमान"। भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है। इस प्रकार धनुष – बाण चलाने में प्रवीण होने के कारण ही भील पुत्र कहा है। भील राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है। महाभारत में भीलों को निषाद कहा जाता था। वैसे राजस्थान के अधिकांश जिलों में भील आबादी कमोबेश पायी जाती है। परन्तु दक्षिणी राजस्थान के बांसवाडा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ एवं सिरोंही जिलों में इनका बहुल्य है।

भील समाज में संबंधित प्रमुख विशिष्टताएं अग्र प्रकार है

1. भीलों के घर "टापरा" या कू कहलाते हैं। टापरा के बाहर बने बरामदे "ढालिया" कहलाते हैं।

2. भीलों के गांव का मुखिया "पालवी/तदवी" कहलाता है। तथा भीलों के सभी गांवों की पंचायत को मुखिया "गमेती" कहलाता है।
3. सामान्यतः भीलों में बाल विवाह प्रचलित नहीं है।
4. विधवा विवाह प्रचलन में है लेकिन छोटे भाई की विधवा को बड़ा भाई अपनी पत्नी नहीं बना सकता।
5. भीलों में रोगोपचार की विधि डामदेना प्रचलित है।
6. शिकार, वनोपज का विक्रय तथा कृषि इनकी आजीविका के मुख्य साधन हैं।

पुरुषों के वस्त्र

फेंटा

सिर पर बांधा जाने वाला लाल/पीला/केसरिया साफा।

पोत्या

सिर पर पहने जाने वाला सफेद साफा।

लंगोटी (खोयतू)

कमर में पहने जाने वाला वस्त्र।

ढेपाडा (ढेपाडा)

पुरुषों द्वारा कमर में घुटनों तक पहने जाने वाली तंग धोती।

अंगरखी बण्डी कमीज, कुर्ता

बदन पर पहनने का वस्त्र।

फालू

कमर रखे जाने वाला अंखोछा।

भील स्त्रियों के वस्त्र**कछावू**

स्त्रियों द्वारा घुटनों तक पहना जाने वाला घाघरा।

सिंदूरी

स्त्रियों की लाल रंग की साड़ी।

पिरिया

भील समाज में दुल्हन द्वारा पहने जाने वाला पीले रंग का लहंगा।

परिजनी

भील महिलाओं द्वारा पैरों में पहनने की पीतल की मोटी चूड़िया।

ओढ़नी

स्त्रियों की साड़ी। तारा मांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं की लोकप्रिय ओढ़नी है। ओढ़नी को लूगड़ा भी कहते हैं।

टोटम

भीलों का कुल देवता भील समुदाय पशु पक्षी एवं पेड़ पौधों को पवित्र मानते हैं एवं उनकी टोटम के रूप में पूजा करते हैं।

फाइरे – फाइरे

भील जनजाति द्वारा शत्रु से निपटने हेतु सामूहिक रूप से किया जाने वाला रणघोष ढोल बजाने या किलकारी मारने पर सभी लोग अपने अस्त्र शस्त्र लेकर फाइरे के घोष के साथ एक स्थान पर इकट्ठे हो जाते हैं।

भील आदिवासी द्वारा मैदानी भागों में जलाकर की जाने वाली खेती (झूमिंग खेती) को झूमटी (दजिया) कहते हैं।

चिमाता

पहाड़ी ढलानों पर की जाने वाली झूमिंग कृषि को भील लोग चिमाता या वालरा कहते हैं।

भील जनजाति निडर, साहसी, स्वामी भक्त तथा शपथ की पक्की होती है। भील लोग केसरियानाथ जी (कालाबावजी या कालाजी या ऋषभदेव जी) के चढ़ाई गई केसर का पानी पीकर कभी भी झूठ नहीं बोलते हैं।

फला

भील घरों का एक मोहल्ला फला कहलाता है।

पाल

भीलों के कई फला का समूह (या गांव) पाल कहलाता है। जैसे नाथरा की पाल। पाल का मुखिया पालवी कहलाता है।

लोकानुरंजन

गैर, ढंकेण, युद्ध नृत्य, द्विचकी नृत्य, घूमरा नृत्य गवरी नृत्य, नेजा आदि भीलों के प्रसिद्ध नृत्य हैं।

भील समुदाय का खान पान

इनके भोजन में मुख्य रूप से मक्का रोटी तथा प्याज (कांड़े) का साग होता है। मक्का उस क्षेत्र में

बहुतायत से होती है। भील लोग महुआ की शराब तथा ताड़ का रस बड़े शौक से पीते हैं।

आजीविका के साधन :

भील समुदाय की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि, शिकार एवं वनों से प्राप्त उत्पाद है। ये पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में पेड़ पौधों को साफ कर स्थानांतरित कृषि – वालरा कृषि (झूमिंग कृषि) कहते हैं।

हाथी मना

विवाह के अवसर पर भील पुरुष द्वारा घुटनों के बल बैठकर तलवार घुमाते हुए किया जाने वाला नृत्य।

हाथी वैण्डो प्रथा

भील समाज में प्रचलित अनूठी वैवाहिक परम्परा जिसमें पवित्र वृक्ष पीपल, साल, बाँस एवं सागवान के पेड़ों को साक्षी मानकर हरज व लाडी (दूल्हा –दुल्हन) जीवन साथी बन जाते हैं।

बेणेश्वर मेला

डूंगरपुर में माही, सोम एवं जाखम नदियों के संग पर बेणेश्वर धाम में माघ पूर्णिमा को आयोजित मेला जो आदिवासियों का कुंभ कहलाता है।

भीलों में विवाह की सह पलायन प्रथा विद्यमान है। जिसमें लडके – लडकी भागकर 2-3 दिन बाद वापस आते हैं। तब गांवों के लोगो द्वारा एकत्रित होकर उनके विवाह को मान्यता प्रदान कर दी जाती है। इसे अपहरण विवाह भी कहते हैं।

भीलों की भाषा “बागड़ी या भीली” कहलाती है। यह भाषा मेवाड़ी या गुजराती भाषाओं से प्रभावित है।

भीलों में कुटुम्ब प्रथा विद्यमान है। परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं।

घोटिया अम्बा मेला

बांसवाडा के घोटिया अम्बा स्थान पर भरने वाला भीलों का प्रसिद्ध मेला।

गवरी या राई

यह भीलों का प्रसिद्ध लोक नाट्य है जो राखी के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर चालीस दिन तक चलता है यह राज्य का सबसे प्राचीन लोक नाट्य है।

गैर नृत्य

फाल्गुन मास में होली के अवसर पर भील पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य। होली भीलों का प्रमुख त्यौहार होता है।

भगत

भील जनजाति में धार्मिक संस्कार सम्पन्न करवाने वाला व्यक्ति “भगत” कहलाता है।

मीणा जनजाति

मीणा जनजाति राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति है। राज्य में इसकी जनसंख्या 2011 में 43.46 लाख (कुल जनजाति आबादी का लगभग 47 प्रतिशत) थी। यह देश की अति प्राचीन जनजाति मानी जाती है। कहा जाता है कि इस जनजाति का गण विन्ह “मीन” (मछली) था। वैदिक काल में यह जनजाति प्रजावत्सल एवं प्रतापी जाति मानी जाती थी। और इसकी वीरता व धीरता का लोहा मानते थे। मुनि मगन सागर ने अपने ग्रंथ मीणा पुराण में मीणा जाति को भगवान मीन का वंशज

बताया है। राज्य की सभी जनजातियों में केवल मीणा जनजाति के लोगों ने ही अपने जनजातिय स्वरूप को भेदकर बाहर आने एवं विकास करने में पहल की है। मीणा जनजाति के लोग मुख्यतः उदयपुर, जयपुर, दौसा, प्रतापगढ़, सर्वाइमाधोपुर, करौली, अलवर बूंदी, टोंक व डूंगरपुर आदि जिलों में निवास करते हैं। मीणा जनजाति की सर्वाधिक आबादी (1) उदयपुर (2) जयपुर एवं (3) प्रतापगढ़ जिले में है। मीणाओं का उल्लेख मत्स्य पुराण में मिलता है।

मीणा जनजाति के प्रमुख रूप से दो वर्ग है

जमींदार मीणा

इस वर्ग के लोग कृषि तथा पशुपालन करते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है।

चौकीदार मीणा

इस वर्ग के लोग राजाओं एवं जमींदारों के महलों एवं कोषागारों की रखवाली करते थे।

आजीविका

मीणा लोगो की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि एवं पशुपालन की है। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सभी जनजातियों में यह जाति सर्वाधिक सम्पन्न एवं शिक्षित हुई है। इस जनजाति की महिलाएं बहुत परिश्रमी, साहसी एवं धैर्यवान होती हैं तथा घरेलू उद्योग धन्धों एवं कृषि दोनों कार्यों में अपने परिवार के पुरुष सदस्यों के साथ बराबर से हाथ बांटती है। मीणा जनजाति मुख्यतः शक्ति की उपासक है। भरतपुर क्षेत्र की मीणा जनजाति दुर्गा पूजक है।

सामाजिक जीवन

1. राजस्थान की मीणा जनजाति में ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बाल विवाह प्रथा बहुत प्रचलित है।
2. मीणा जनजाति में मृतक के शव को जलाने की प्रथा है मृत्यु के 12 वे दिन सामूहिक भोज (मोसर) किया जाता है।
3. मीणों में शरीर पर गोदने गुदवाने का रिवाज भी है। जो स्त्रियों एवं पुरुषों में समान रूप से प्रचलित है।
4. मीणा समाज में नाता प्रथा भी विद्यमान है। जिसमें एक विवाहित स्त्री अन्य पुरुष के साथ रहने लग जाती है। परन्तु जिस पुरुष से वह नाता करती है उसके पूर्व पति को मुआवजे की रकम (झगडा रकम) देनी होती है। विधवा विवाह को इस समुदाय में सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
5. आदिवासी मीणों के जंगलों में बने हुए घर मेवासे कहलाते हैं।
6. ओबरी : मीणा समाज में अनाज संग्रह हेतु मिट्टी की बनाई गई बड़ी बड़ी कोठियां ओबरी कहलाती है।
7. मीणा जनजाति में पंचायत का मुखिया पटेल कहलाता है।
8. मीणा समुदाय के लो देवता बुझ देवता है।
9. मीणा लोग रेवासा (सीकर) में विराजमान जीण माता के उपासक है।
10. मीणा समुदाय में संयुक्त परिवार एवं एकाकी परिवार दोनों प्रथा प्रचलित है।
11. खान पान – मीणा लोगो के भोजन में मक्का, ज्वार,बाजरा, गेहूँ, जौ, प्याज, चटनी, छाछ, दूध, दही

खिचड़ी, राबड़ी आदि शामिल होते हैं। हुक्का पीना भी प्रचलित है।

12. वस्त्राभूषण – पुरुष लोग अंगरखी, धोती, सिर पर पगड़ी, साफा आदि पहनते हैं। सर्दी में रेजे का बना पछेवडा ओढ़ लेते हैं। स्त्रियां ओढ़नी, घाघरा, कब्जा, कांचली, पहनती है। तथा पैरो में कडे, कमर में कमरबंद, गले में खुगाली, सिर पर पगड़ी आदि पहनती है। पुरुष लोग कान में मुरकी पहनते हैं।

सहरिया जनजाति

1. सहरिया जनजाति बारां जिले की मध्यप्रदेश की सीमा से लगी तहसीलों शाहबाद और किशनगंज में (राज्य की कुल सहरिया जनसंख्या का लगभग 97 प्रतिशत) अवस्थित है। थोड़ी संख्या में से कोटा एवं झालावाड में भी है। राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाली सहरिया जनजाति का विस्तार उत्तरी पश्चिमी मध्यप्रदेश के शिवपुरी, मरैना, ग्वालियर, दतिया एवं गुना जिलों में भी है। राजस्थान में सहरिया जनजाति की कुल आबादी (2011) में 1.11 लाख थी।
2. कतिपय मानवशास्त्री सहरिया शब्द की उत्पत्ति फारसी भाषा के सहर शब्द से मानते हैं जिसका अर्थ जंगल होता है और ये जंगल में निवास करते हैं। जंगल से ही इनका निर्वाह होता है।
3. सहारना के बीच में एक छतरीनुमा गोल या चौकोर झोपड़ी या ढालिया बनाया जाता है। जिसे हथाई या बंगला कहते हैं यह सहरिया समाज की सामुदायिक सम्पत्ति होती है।

सहरिया समाज की प्रमुख विशेषताएं निम्न है

1. सहरिया शिकार पर निर्भर रहते हैं और इस कला में पूर्णतः दक्ष हैं।
2. जंगली फलों व वनोपजों को संग्रह कर अपने काम में लेते हैं या अनाज के बदले बेच देते हैं।
3. सहरियों के घर सामान्यतः मिट्टी, पत्थर, बाँस, लकड़ी और घासफूस के बने होते हैं। जिन्हे टापरी कहते हैं।
4. अनाज तथा घरेलू सामान को सुरक्षित रखने के लिए सहरिया परिवार घर के अंदर मिट्टी व गोबर से सुंदर एवं कलात्मक विभिन्न आकारों की कोठिया बनाते हैं। छोटी कोठी को कुसिला तथा आटा रखने की कोठी को भंडेरी कहा जाता है।
5. घने वनों में निवास करने वाले सहरिया परिवार पेड़ों पर बल्लियों पर मचाननुमा छोटी झोपड़ी बनाते हैं। जिसे "गोपना" कोरूआ या टोपा कहते हैं।
6. गोत्र सहरिया सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण आधार है।
7. पिता की मृत्यु पर ज्येष्ठ पुत्र परिवार का मुखिया बनता है।
8. सहरिया समुदाय में दहेज प्रथा प्रचलित है।
9. सहरिया समुदाय में नाता प्रथा प्रचलित है। कोई विवाहित स्त्री अपनी इच्छा से किसी अन्य पुरुष से नाता कर सकती है किन्तु विवाहिता से नाता करने के मामले में नया पति पूर्व पति को झगडा राशि अदा करता है।

10. विधवा विवाह भी प्रचलित है। विधवा स्त्री सामान्यतः अपने देवर के साथ या उसके तैयार नही होने पर समुदाय के किसी अन्य पुरुष के साथ विवाह कर सकती है।
11. सहरिया समुदाय में बच्चों का मुंडन संस्कार करवाने की भी प्रथा प्रचलित है।
12. सहरिया परिवार की कुलदेवी कोडिया देवी है।
13. सहरिया समुदाय में मृतक का श्राद्ध करने की परम्परा नहीं है।
14. ये लोग काली और दुर्गा के भक्त हैं और नवरात्रों में नौ दिनों तक काली की पूजा करते हैं।
15. तेजाजी इनके लोकप्रिय लोकदेवता है जिनका चबूतरा लगभग प्रत्येक सहराने के बाहर देखने को मिल सकता है। भैरव भी सहरिया समुदाय के महत्वपूर्ण लोकदेवता है।
16. ब्रज क्षेत्र भी भाँति सहरिया समुदाय में भी लट्ठमार होली की परम्परा प्रचलित है।
17. सहरिया समुदाय में नृत्य के कार्यक्रमों में पुरुष और स्त्री वर्ग एक साथ मिलकर नहीं नाचते हैं।
18. मकर संक्रांति पर लडकी के डंडों से "लेंगी" खेजा जाता है। दीपावली के पर्व पर हीड गाने की परम्परा प्रचलित है। वर्षा ऋतु में लहंगी एव आल्हा गया जाता है।
19. सहरिया लोगों के भोजन में ज्वार, बाजरा, एवं मक्का की प्रमुखता है। विवाह एवं त्यौहारों पर मीठी लापसी, पुवार एवं चूरमा बाटी का भोजन पंसद किया जाता है।
20. वेशभूषा : पुरुष वर्ग अंगरखी, घुटनों तक ऊँची धोती (पंछा), कुर्ता कमीज, साफा, (खपटा) पहनते हैं और अपने कंधे पर तौलिया धारण करते हैं। पुरुष कानों में बालियाँ, गले में ताबीज और चेन तथा हाथों की कलाई में कड़ा पहनते हैं।

धारी संस्कार

मृत्यु के तीसरे दिन मृतक की अस्थियां व राख एकत्र कर रात्रि में साफ आंगन में बिछाकर ढक देते हैं एवं दूसरे दिन उसे देखते हैं। यह मान्यता है कि राख में जिस आकृति के पदचिन्ह बनते हैं मृतक उसी योनी में पुनर्जन्म लेता है। आकृति देखने के बाद अस्थियाँ एवं राख को सीताबाडी में स्थित बाणगंगा या कपिलधारा में प्रवाहित कर दिया जाता है। सहरिया समुदाय में इसे धारी संस्कार कहते हैं।

आजीविका

सहरिया लोगो की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि, मजदूरी, बनो से लकड़ी एवं अन्य उपजें एकत्रित करना है। सहरिया समाज में बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन है।

गरासिया जनजाति

1. राजस्थान की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति (कुल जनजातियों का 3.4 प्रतिशत) गरासिया जनजाति है। राज्य में इनकी आबादी (2011 में) 3.14 लाख थी।
2. गरासिया जन जाति का बाहुल्य सिरौही जिले की आबूरोड एवं पिंडवाडा तहसील, पाली जिले की बाली तथा उदयपुर जिले के गोगुन्दा तथा कोटडा तहसील

में है। आबूरोड का भाखर क्षेत्र गरासियों का मूल प्रदेश माना जाता है। कर्नल जेम्स टॉड ने गरासियों की उत्पत्ति गवास शब्द से मानी है। जिसका अभिप्राय सर्वेन्ट होता है। सर्वाधिक गरासिया सिरौही, उदयपुर एवं पाली जिले में है।

3. अपने विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्यों, जीवनयापन के तौर-तरीकों, पुरातन परम्पराओं, अनूठे रीति- रिवाजों, रंग-बिरंगे एवं चटकीले परिधानों, विविध धार्मिक मान्यताओं आदि के कारण यह जनजाति राज्य की अन्य सभी जनजातियों से अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

प्रमुख विशिष्टताएं

1. गरासियों के घर "घेर" कहलाते हैं। गांवों की सबसे छोटी इकाई फालिया कहलाती है।
2. गरासिया लोग अधिक रंग बिरंगे एवं चटकीले वस्त्र पहनने के विशेष शौकीन होते हैं। सौंदर्य वृद्धि के लिए गोदने गुदवाने की प्रथा है।
3. गरासिया जनजाति की पंचायत के मुखिया को सहलोट या पालवी कहते हैं।
4. माउण्ट आबू की नक्की झील इनका पवित्र स्थान है जहां ये अपने पूर्वजों का अस्थि विसर्जन करते हैं।
5. मोर को ये आदर्श पक्षी मानते हैं।
6. बांसुरी, नगाडा, अलगोजा गरासियों के प्रिय वाद्य हैं।
7. लूर, घूमर, वालर, कूँद, मांदल, गौर, ज्वार नृत्य मोरिय नृत्य आदि गरासियों के मुख्य नृत्य हैं।
8. गरासिया लोग पूर्णतः प्रकृति जीवी हैं। इनके निवास कच्चे, घासफूस, बांस बल्ली से युक्त बड़े साफ सुथरे तथा स्वच्छ पर्यावरण दर्शित मिलेंगे।
9. गरासिया का मुख्य कार्य कृषि एवं पशुपालन है।
10. गरासिया अनाज का भंडारण कोठियों में करते हैं जिन्हें सोहरी कहा जाता है।
11. गरासिया समाज मुख्यतः एकाकी परिवार में विभक्त होता है। परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं। पिता परिवार का मुखिया होता है।
12. गरासियों की भाषा गुजराती, भीली, मेवाड़ी, एवं मारवाडी का मिश्रण कहा जाता है।
13. भील गरासिया - यदि कोई गरासिया पुरुष किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता हो तो ऐसा परिवार को भील गरासिया कहा जाता है।
14. गमेती गरासिया - यदि कोई गरासिया पुरुष किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता हो तो ऐसा परिवार गमेती गरासिया परिवार कहा जाता है।
15. सामाजिक परिवेश की दृष्टि से गरासिया 3 वर्गों में विभक्त होते हैं (1) मोटी नियात - ये उच्च वर्ग के होते हैं जो अपने को बाबोर हाइया कहते हैं। (2) नेनकी नियात - ये मध्यम श्रेणी के होते हैं और माडेरिया कहलाते हैं। (3) निचली नियात - ये निम्न श्रेणी के गरासिया हैं।
16. गरासियों में प्रेम विवाह का बहुत प्रचलन में है।
17. कोंधियां या मेंक : गरासिया समुदाय में मृत्युभोज को इस नाम से पुकारते हैं।
18. घेण्टी : गरासिया घरों में प्रयुक्त हाथ चक्की।

19. गरासिया लोग शिव, भैरव व दुर्गा के उपासक होते हैं। इनमें अंधविश्वास व्याप्त है।
20. गरासिया समाज का प्रारंभ आखातीज से होता है।
21. हुरे : गरासिया समाज में मृतक की याद में बनाया जाने वाला स्मारक।
22. मोतीलाल तेजावत ने भीलों एवं गरासियों में एकी आंदोलन का सूत्रपात कर इन्हे एकता के सूत्र में बांधा।
23. आटा – साटा— आदिवासियों में प्रचलित विवाह प्रथा जिसमें लडकी के बदले में उसी घर की लडकी को बहू के रूप में लेते हैं।
24. आणा करना (चुनरी ओढाणा) – गरासिया जनजाति में विधवा विवाह करने को आणा/ नातरा करना कहते हैं।
25. अनाला भोर भू प्रथा – गरासिया जनजाति में विधवा विवाह करने को आणा/नातरा करना कहते हैं।
26. सेवा विवाह : गरासियों में प्रचलित विवाह जिसमें वर, वधु के घर, घर जवाई बनकर रहता है।
27. खेवणा (माता विवाह) – विवाहित स्त्री द्वारा अपने प्रेमी के साथ भागकर विवाह करना।
28. मेलबो विवाह :- गरासियों में प्रचलित इस विवाह में विवाह खर्च बचाने के उद्देश्य से वधू को वर के घर छोड़ देते हैं।
29. कृषि व पशुपालन इनके जीवनयापन का मुख्य आधार है।
30. गरासिया जनजाति अत्यन्त भोली – भांली, ईमानदार, वचन की सच्ची और परिश्रमी होती है।

वेशभूषा एवं आभूषण

1. गरासिया पुरुष एक धोती, एक झूलकी/ पुठियों (कमीज), और सिर पर साफा (फेंटा) बांधता है। हाथों में कडले (कडे) व भाटली, गले में पत्रला अथवा हंसली और कानों में झेले अथवा मूरकी, लूंग, तंगल आदि पहनते हैं।
2. गरासिया स्त्रियां कांच का जडा हुआ लाल रंग का घाघरा व ओढणी कुर्ता व कांचली प्रमुख रूप से पहनती हैं। कुंआरी लडकियां लाख की चूडिया पहनती हैं। व विवाहित स्त्रियां हाथी दांत की चूडिया पहनती हैं।
3. गरासिया लोगों को वस्त्रों पर कशीदाकारी बहुत पसंद है।
4. हेलरू गरासिया समाज की एक सहकारी संस्था।

कथौड़ी जनजाति

1. राज्य की कुल कथौड़ी आबादी की लगभग 52 प्रतिशत कथौड़ी लोग उदयपुर जिले की कोटडा, झाडोल, एव सराडा, पंचायत समिति में बसे हुए हैं। शेष मुख्यतः डूंगरपुर, बांरा एवं झालावाड में बसे हैं। ये महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। कथा बनाने में दक्ष होने के कारण वर्षों पूर्व उदयपुर के कथा व्यवसयियों ने इन्हे यहां लाकर बसाया। कथा तैयार करने में दक्ष होने के कारण ये कथौड़ी कहलाए। राजस्थान में 2011 की जनगणना के अनुसार कथौड़ी जनजाति की कुल आबादी मात्र 4833 है।

2. वर्तमान में वृक्षों की अंधाधुध कटाई व पर्यावरण की दृष्टि से राज्य सरकार द्वारा इस कार्य को प्रति बंधित घोषित कर दिए जाने कथौड़ी लोगों की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय एवं बदतर हो गयी है। आज य जनजाति समुदाय जंगल से लघु वन उपज जैसे बांस, महुआ, शहद, सफेद मूसली, डोलमा, गोंद, कायेला एकत्र कर और चोरी छुपे लडकियां काटकर बेचने तक सीमित हो गया है।
3. राज्य की अन्य सभी जनजातियों की तुलना में इस जनजाति के लोगो का शैक्षिक एवं आर्थिक जीवन स्तर अत्यधिक निम्न है।

प्रमुख विशेषताएं

1. कथौड़ी जंगलों व पहाड़ों में रहने वाली ऐसी जनजाति है, जो स्वभावतः अस्थायी एवं घुमन्तु जीवन जीती रही है।
2. खेर के जंगलो से कथा तैयार करने के अलावा मछली पकड़ना, कृषि कार्य करना यह जनजाति अपना गुजर बसर करती है।
3. कथौड़ी लोग घास – पूस, पत्तों एवं बांसों से बने झोपड़ों, जिन्हे खोलरा कहते हैं, में रहते हैं।
4. परिवार आत्म केन्द्रित होते हैं। व्यक्ति शादी होते ही अपने मूल परिवार से अलग हो जाता है। नाता करना, विवाह विच्छेद एवं विधवा विवाह प्रचलित है।
5. कथौड़ी मांसाहारी भी होते हैं। दैनिक खानपान में मक्का, ज्वार बंटी आदि की रोटी प्याज आदि के साथ खाते हैं। चावल उनको प्रिय है पेय पदार्थों में दूध का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता है।
6. स्त्रियां मराठी अंदाज में साडी पहनती हैं, जिसे फडका कहते हैं गहने पहनने का कोई रिवाज नहीं है।
7. शरीर पर गोदने का महत्व है।
8. इस जनजाति में मावलिया नृत्य एवं होली नृत्य प्रमुख है।
9. मावलिया नृत्य नवरात्रों में पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें 10-12 पुरुष ढोलक, टापरा एवं बांसली की ताल पर गोल गोल घूमते हुए नाचते हैं।
10. होली नृत्य में कथौड़ी स्त्रियां होली के अवसर पर एक दूसरे का हाथ पकड़कर नृत्य करती हैं। नृत्य के दौरान पिरामीड भी बनाती हैं। पुरुष उनकी संगत में ढोलक, घोरिया, बांसली बजाते हैं।
11. कथौड़ी जनजाति के लोक वाद्य : इनके वाद्य यंत्रों में गोरिडिया एवं थालीसर मुख्य है।
12. तारणी : लोकी के एक सिर पर छेद कर बनाया जाने वाला वाद्य जो महाराष्ट्र के तारपा लोकवाद्य के समान है।
13. घोरिया या खोखरा : बांस से बना वाद्य यंत्र।
14. पावरी : तीन फीट लंबा बांस का बना वाद्य यंत्र। इसे मृत्यु के समय बजाया जाता है।
15. टापरा : बांस से बना लगभग 2 फीट लम्बा वाद्य यंत्र।
16. थालीसर : पीतल की थाली के समान बनाया गया वाद्य यंत्र। इसे देवी देवताओं की स्तुति के समय या मृतक का अंतिम संस्कार के बाद बजाते हैं।

17. कथौड़ी प्रकृति पर आश्रित हैं वे पुनर्जन्म को पूरी तरह मानते हैं।
18. कथौड़ी लोगों के प्रमुख परम्परागत देवता डूंगर देव, वाद्य देव, गाम देव, भारी माता, कन्सारी देवी, आदि हैं। कथौड़ी देवताओं से ज्यादा देवी भक्ति में विश्वास रखते हैं।
19. कथौड़ी समाज में मुखिया को नायक कहते हैं।
20. विवाह में प्रथा व विधिवा पुनर्विवाह प्रचलित है। मृत्युभोज प्रथा भी प्रचलित है।

डामोर जनजाति

डामोर जनजाति मुख्यतः डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर जिलों में (गुजरात से लगी सीमा क्षेत्रों में) (राज्य की कुल डामोर आबादी का लगभग 98 प्रतिशत) बसी हुई है। सर्वाधिक डामोर डूंगरपुर जिले में है। जो कुल डामोरों का 61.61 प्रतिशत है। इसके पश्चात बांसवाडा व उदयपुर जिले में क्रमशः सर्वाधिक डामोर रहते हैं। कुछ डामोर प्रतापगढ, कोटा एवं सिरोही जिलों में भी रहते हैं। डूंगरपुर जिले की सीमलवाडा पंचायत समिति में सर्वाधिक डामोर है। यह क्षेत्र डामरिया क्षेत्र कहलाता है। डामोर, अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते हैं।

1. डामोरों में एकाकी परिवार में रहने की प्रथा है। पुत्र का विवाह होने के उपरान्त उसके लिए अलग से घर की व्यवस्था कर दी जाती है। माता पिता प्रायः छोटे पुत्र के साथ रहना पसंद करते हैं।
2. डामोर पुरुष भी महिलाओं के समान गहने पहनने के शौकीन होते हैं।
3. परिवार का मुखिया पिता होता है।
4. नातेदारी प्रथा, तलाक व विधवा विवाह का प्रचलन मिलता है।
5. डामोर गुजरात के प्रवासी होने के कारण स्थानीय भाषा के साथ – साथ गुजराती भाषा का भी प्रयोग करते हैं।
6. इनका व्यवसाय कृषि है। यह जनजाति कभी भी वनों पर आश्रित नहीं रही। गुजरात में सामान्यतया: मैदानी क्षेत्रों में निवास करते हैं और कृषि के साथ-साथ पशुपालन का कार्य भी करते हैं।
7. डामोर समुदाय की पंचायत के मुखिया को मुखी कहते हैं।
8. गांव की सबसे छोटी इकाई फलां कहलाती है।
9. इस जनजाति में विवाह का मुख्य आधार वधू मूल्य होता है। वर पक्ष को लड़की के पिता को वधु मूल्य देना पड़ता है।
10. पुरुषों में बहु विवाह कर एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा प्रचलित है।

डामोर समुदाय के प्रमुख मेले

(1) पंच महल (गुजरात) में छैला बावजी का मेला।

(2) डूंगरपुर (राजस्थान) में सितम्बर माह में भरने वाला ग्यारस की रैवाडी का मेला।

1. डामोर लोगों को डामरिया भी कहते हैं।
2. चाडिया : डामोर समाज में होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम।

कंजर जनजाति

1. ये मुख्यतः कोटा बूंदी, बांरा, झालावाड, सवाई माधोपुर, उदयपुर, अलवर व अजमेर जिला में पाये जाते हैं।
2. कंजर जनजाति में मुखिया को पटेल कहा जाता है।
3. कंजर शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द काननचार/कानकचार से हुई मानी जाती है, जिसका अर्थ जंगल में विचरण करने वाला होता है।
4. इस जनजाति में चौथमाता, रक्तदजी माता एवं हनुमान जी को आराध्य देव माना जाता है। चौथ माता का मंदिर – चौथ का बरवाडा (स. माधोपुर) में तथा रक्तदजी माता का मंदिर संतूर बूंदी में है।
5. हाकम राजा का प्याला कंजर लोग हाकम राजा का प्याला पीकर कभी झूठ नहीं बोलते। अतः किसी मामले की सफाई जानने हेतु लोग हाकम राजा के प्याले की कसम खाते हैं।
6. कंजर जनजाति की कुल देवी जोगणिया माता है।
7. कंजर महिलाएं नाचने गाने में कुशल होती हैं। इनका चकरी नृत्य प्रसिद्ध है।
8. खुसनी कंजर महिलाओं द्वारा कमर में पहना जाने वा वस्त्र। इनका प्रमुख वाद्य ढोलक एवं मजीरा है।

सांसी जनजाति

1. सांसी जनजाति की उत्पत्ति “सांसमल” से मानी जाती है।
2. यह जाति मुख्यतः भरतपुर व अजमेर जिले में निवास करती है।
3. इस जाति के लोग खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हैं। छोटी – छोटी हस्तशिल्प के निर्माण से भी आजीविका चलाते हैं।
4. सांसियों में विधवा विवाह प्रचलित नहीं है।
5. कूकडी की रस्म : सांसी जनजाति की एक रस्म जिसके तहत विवाहोपरान्त युवती को अपनी चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती है।
6. इस जनजाति में नारियल के गोले के आदान प्रदान से सगाई की रस्म पूरी होती है।
7. सांसी जनजाति भाखर बावजी को अपना संरक्षण देवता मानती है।
8. सांसी जनजाति में दो वर्ग हैं – बीजा व माला।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है की विशिष्ट संस्कृति रीति रिवाजों के साथ आधुनिकता का प्रभाव पड रहा है। खुशी सूचकांक से तुलना करने पर इनमें खुशी का स्तर अच्छा पाया गया। विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं सरकारी व निजी प्रयासों तथा वैश्वीकरण से जनजातियों का सामाजिक विकास हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. टॉड ने (1914): एनाल्स एण्ड एक्टीक्व्यूटीज ऑफ राजस्थान, वॉल्यूम-1, जार्ज रोटलेन एण्ड संस, लंदन।
2. राय,एस.सी (1937) : द खरिया रांची : मैन इन इण्डिया ऑफिस, नई दिल्ली, पृ.10

3. दवे, पी.सी. (1960):दी गरासिया, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, दिल्ली।
4. दयाल एम (1968):द चेनजिंग पैटनर्स ऑफ इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड्स, इकोनोमिक ज्योग्राफी वोल्यूम 44, पृष्ठ संख्या 240 – 269, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर और दिल्ली।
5. मुरदिया बी.एस. (1968):राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण, पीएच.डी. शोध प्रबन्ध सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
6. Agarwala S.N. (1977) India's populaitopn problem Tata Mc Graw Hill New Delhi
7. Kothari CR., (1986) Research Methodolgy. Methods and Techniques willey Estern limited New Delhi.
8. Krishan G. (1975) Some aspects population Growth in India pacific view point Vol. 16 PP. 207-210
9. Mahadevan K. and P. Krishan (1993) Methodology for population studies and development sage poblication New Delhi.